मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १७० • सितम्बर-२०२१

प्रकाशक :

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सेवा करते इन हरिभक्तो की तसवीर कैमरा में रखते हुए। स्वयं आचार्य महाराजश्री प्रेरित हुए - कारण कालुपुर मंदिर के गल्ला पेटी में (दानपात्र) आने वाले धन को द्वादशी के दिन गिनकर व्यवस्थित रुप में कोठार ओफिस में जमा करने की सेवा इस मंडल द्वारा वर्षो से की जाती रहै और सभी गल्लापेटी की चाबीया गल्लापेटी समिति अपने पास ही रखते है। यह स्वयंभु द्वारा रचित मंडल तथा उसके सदस्य स्वयं करते जाते है। इस सेवा के रुप में ये लोग कभी भी भोजन या प्रसाद की अपेक्षा भी नही रखते है। धन्य है ऐसे शूरवीर हरिभक्तो को

नारणपुरा मंदिर में पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित ज्ञान सत्र।

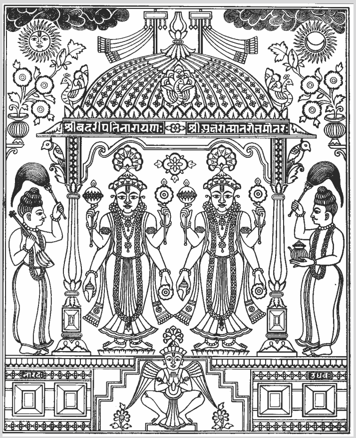

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १७० ● सितम्बर-२०२१

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	शिव मंदिर में कच्छप (कछुहा)	०६
०४.	पर्व के साथ साथ	०८
०५.	राजपुर	०९
०६.	श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन	११
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	भक्ति सुधा	१६
०९.	सत्संग समाचार	१८

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

मनुष्य को केवल मोक्ष की कामना होती है। मोक्ष अर्थात् सभी प्रकार के भय से छुटकारा निर्भय रुप से रह सके वैसा धाम है। जहाँ पर भूख, प्यास, रात्रि, अंधकार का लेश मात्र भी भय न हो। स्वयं कृष्ण भगवान कहते है कि मेरा धाम कैसा है जहाँ पर न तद्भसयते सूर्यो न शशांको यद्गत्वा न निवर्तंते तद्धाम परम मम ॥ गीता के बचनानुसार भगवान के धाम में सूर्य और चन्द्रमा नही, न रात्रि नही दिन समय अर्थात् काल भी नही इस लिये किसी प्रकार का परिवर्तन नही होता है। उसके विपरीत संसार परिवर्तनशील है। जैसे-जैसे समझ में आता है। प्रकृति बदल जाती है। जहाँ हरा-भरा होता है वहाँ पर शुष्क हो जाता है। जहाँ पर सूखा वहाँ पर वर्षा तथा सब कुछ हरा-भरा हो जाता है। स्वभाव, व्यवहार भी बदलता है। मनुष्य बदल जाता है। बालक वृध्द और वुध्द जवान हो जाता है। इस परिवर्तन शील संसार में जो स्फूर्तिपूर्वक कार्य मे लग जाता है। उसे अच्छी सफलता मिलती है। इसमें विलम्ब करने से या आलस्य करने पर हाथ में निराशा ही आती है। सनत्कुमारो कहते है कि ''प्रमाद एवम् मृत्यु अप्रमाद एवं मोक्ष'' आलस्य दीर्ध सूत्रतता ही जीवनमें मृत्यु सम है। आलस्य छोडकर कार्य में तुरंत लग जाना यही मोक्ष है। अति चंचल स्वभाव के कारण भगवान श्रीकृष्ण का प्रागट्य इसी ऋतु में है। यह ज्ञात होता है कि आलस्य छोडकर अपने कार्य के प्रति पूर्ण शक्ति से लग जाये तो हमेशा विजय होगी। अन्य था मन का गायन करने पर रोने का दिन आता है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अगस्त-२०२१)

३ (अषाढ वद-१०) प.पू. लालजी महराजश्री का २४ वाँ प्रागट्योत्सव अपने शुभ सानिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में मनाया गया ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर अहमदाबाद श्री गणपतिदेव की प्राण प्रतिष्ठा अपने कर कमलो से पूर्ण किये।

८ श्री नरनारायणदेव के २०० वे ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में नारणपुरा मंदिर द्वारा आयोजित श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन के अवसर पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर सभा में धुन में आये थे ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(अगस्त-२०२१)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में संत-हरिभक्त ने २४ वे प्रागट्योत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया ।

- रीलीफ रोड से कालुपुर मंदिर के आते तरफ अहमदाबाद म्युनिसिपालिटी द्वारा तैयार की गई श्री स्वामिनारायणमंदिर के प्रवेश द्वार का उद्‌घाटन विधिवत रुप से अपने हाथों से पूर्ण किये ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर ऐप्रोच बापुनगर पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून के अवसर पर जाना ।

१४ जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में नारणपुरा मंदिर द्वारा पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन के अवसर पर आये थे ।

शिव मंदिर में कच्छप (कछुहा)

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवान सदाशिव भोलेनाथ महादेव के प्राय: शिव परिवार में दूर्गा- पार्वती - गंगाजी कार्तिकेय, सेवक में नंदीजी कच्छप भैरव इत्यादि सेवक गण के साथ भगवान की पूजा की जाती है। उनके परिवार के स्वरुप को ज्ञात करने की ईच्छा सभी में अधिक होती है। लेकिन कच्छप के विषय में विशेष जानकारी लोग प्राप्त करना चाहते है। क्यो कच्छप होता है ? ऐसे प्रश्न मुमुक्षु जिज्ञासु विशेष कर पूछते है। मंदिर के बाहर नंदीजी के आगे कच्छप का दर्शन अवश्य मिलता है। नंदीजी तो शिवजी के वाहन है। यह सरलता से समझ में आता है। लेकिन कच्छप क्यो है ? किस लिये स्थापना की जाती है। उसका रहस्य जानने (समझने) योग्य है।

अपने सनातन वैदिक परम्परा के मंदिरो की स्थापना किसी कथा के साथ या वैदिक पुराणो या अध्यात्मिक सिद्धांत पर आधारित होता है। इसमें कंई परिस्थितिओ में दंत कथाये भी जोड दी जाती है।

बात कच्छप और नंदीजी का करते है। इन दोनो की दृष्टि शिवलिंग के उपर बनी रहती है। नंदीजी के आगे कच्छपजी होते है। अब हम तात्विक और आध्यात्मिक दृष्टि से देखे तो नंदीजी धर्मवाले स्थूल शरीर के प्रतीक है। और कच्छप चार चरण वाले सूक्ष्म शरीर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के प्रतीक है। नंदीजी सामान्य बैल नही है। वे स्वयं शिवजी के ग्यारह अवतारो में नंदीजी शिव अवतार है। और कूर्म अवतार समुद्र मंथन के समय में मंदराचल पर्वत के पीठ पर रखे थे। ये भगवान नारायण के अवतार है। जो चौवीस अवतारो में माने जाते है। विशिष्ट द्वैत दर्शन के अनुसार परमात्मा आत्मा में निवास करते है। परब्रह्म शरीर और आत्मा शरीर अर्थात् नंदीजी आत्मा शिव परमात्मा, स्थूल, सूक्ष्म दोनो शरीर अर्थात् नंदी - कच्छपजी धीरे-धीरे शिव की तरफ आगे बढते रहते है। तो नंदीजी बैठकर खुले आँख से शिवजी का ध्यानक रकते है। भगवान ध्यानस्थ होते है। तब भक्तो की मनोकामना पूर्ण करने की जिम्मेदारी नंदीजी की होती है। इस लिये भक्त लोग अपना संकल्प नंदीजी के कान में कहकर शिवजी का दर्शन करते है। नंदी को वृषभ भी कहा जाता है। वृषभ अर्थात् साक्षात् धर्म। उसके चार चरण होते है। वेद में धर्म को पृथ्वी का धारक, पोषक कहा गया है। संसार में सत्व गुण का पालन-पोषण, सम्बर्धन धारण करने वाले धर्मदेव है। वे आदि-अनादि काल से है। हमारा मन अन्त:करण कछुआ की तरह दृढ, मजबूत, धीरज-धर्म, संकोच-विकास की अवस्था वाला होना चाहिए। कछुआ क कोई अपना घर नहीं होता है। उसकी पीठ ही उसका घर होता है। घर को साथ में रखकर चलता है। जहाँ पर रहना हो वहाँ पर रह सकता है। नही रहना है तो वहाँ से

प्रस्थान कर देता है किसी प्रकरा की तृष्णा नही होती है। कभी मोह-माया-ममता भी नही जहाँ इच्छा हो वहाँ रह सकता है। छोडने र मुडकर देखता भी नही है। समय खराब होने पर चारो पैर अन्दर लेकर परमात्मा के सामने दिव्य अनुभूति करता है। सिर के उपर वजन से मारे केवल आवाज आयेगी उसे कोई दुख का प्रभाव नही आता है।

कुर्म-नंदीजी को मंदिर में स्थापित करने का दूसरा कारण यह है कि शिवलिंग में से अधिक मात्रा में ऊर्जा शक्ति ऐश्वर्य की तरंगे हमेशा बनती है। उस शक्ति को साधारण व्यक्ति सहन नही कर सकता है। वह तेज पूजारी के उपर विपरीत प्रभाव डाल सकता है। वह शिव शक्ति कूर्म और नन्दीजी को स्पर्श करते हुए। मनुष्य के उपर अच्छा प्रभाव डालता है। वह पवित्र होकर ऊर्जावान बनता है। इसलिये कभी कूर्म और शिवलिंग के बीच में खडे होकर कभी दर्शन तथा पूजा नही करना चाहिए।

भगवान का दर्शन करे से पूर्व नंदी-कूर्म की वंदना करने से शरीर में धर्म तत्व प्रबल बनता है। और कूर्म की वंदना करने से मन शांत और बुद्धि पवित्र होती है। धर्म और मन पवित्र होने से परमात्मा के दर्शन करने का सुख मिलता है। नंदीजी हमारे शरीर को परोपकार संयम, सत्य नीति के लिये प्रेरित करता है। कूर्मजी मन को शुद्ध पवित्र करके मन को कवच की तरह मजूबत दृढ संकल्प वाला बनाता है। नंदीजी विशेषकर पुरुषार्थ के द्योतक है। उनकी दृष्टि शिव के तरफ होती है।नंदी शिवजी के वाहन है। उसी प्रकार अपने आत्मारुप में परमात्मा के वाहन है। कूर्मजी कवच की तरह अपने मन को कर्म से दूर न रखे। पवित्र कार्य परमातमा सम्बन्धित कार्य में विकसित करके बर्हिमुखी बने। पाप या स्वार्थ - अधर्म के कार्यो में अर्न्तमुखी बनकर उससे दूर रहे। वृत्तियो को कम करना सिखाते है।

नंदीजी और कूर्मजी दोनो प्रतिकात्मक रुप में आध्यात्मिक प्रेरणा देते है। मंदिर में मात्र दर्शन के लिये नही बल्कि जीवन की प्रेरणा-प्रेरक प्रगति का विचार देता है।

हमारे जीवन से जुडी अनेक बात किसी न किसी को प्रेरणा प्रदान करती है।

किसानो के जानकारी हेतु

प्रगतिशील किसान की कहानी

पटेल नटवरभाई धनजीभाई (ग्राम मांडलोप, ता. चाणस्मा, जि. पाटण) मो. : ९९०९५०८५६७

श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान एक लघु सत्संगि किसान है। मैट्रिक पास है। उनके पास केवल ७ वीघा खेत है। लेकिन कृषि के प्रगति के लिये उन्हे ७ जितने एवार्ड मिल चुके है। जैसे देशी गाय आधारित सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती १४ वर्ष से करते है।

इसमें अजवाईन, राई, सौफ, गेहूँ और घासचारा और बागवानी के फसल पिछले २१ वर्ष से आँवले का वृक्षारोपण किये है। यह कृषि वैज्ञानिको के योग्य सलाह से १६ वर्ष के आँवला वृक्ष को काटकर उस पर डाई कटिंग करके वृक्ष की पूरी प्रजाति को बदल कर रेसा विना **(N.A. 7)** वृक्ष का विकास किया है। जिसकी अधिक माँग और मूल्य मिलता है। गुजरात आरगेनिक प्रोडक्ट के साथ जुडकर डबल आय प्राप्त कर रही है। व्यापारी उसके खेत में जाकर खरीदते है। जिससे खर्च बच जाता है। यहाँ पर आकर-देखकर कई लोग प्राकृतिक खेती करने लगे है। केचुए जो जमीन से गायब हो गये थे। अब वे पुन: दिखायी दे रहे है। इससे भूमि उपजाउ बनती है। उत्पादन और लाभ में इससे वृद्धि होती है। ये प्राकृतिक कृषि के ट्रेनर के रुप में कार्य करते है। सरकार के मनरेगा योजना में भूगर्भ जल संचय योजना के अर्न्तगत वर्षा काल में अतिरिक्त जल को जमीन में उतारकर (रिचार्ज करने के लिये ८० फुट गहरा और तथा ८ केडायमीटर वाला ट्यूबवेल मंजूर किया गया है।) साथ ही साथ आम्र, वैर और आँवला की कलमे (नर्सरी) में बनाकर किसानो को अपूर्ति करते है। नर्मदा के नीर से पूरा क्षेत्र हरियाणा की तरह हो गया है। खेत में कच्छ के उत्तम किस्म के आँवला के वृक्ष का ''माडल फार्म'' बनाये है। किसान भाई पटेल नटवरभाई के मोबाईल नंबर पर सम्पर्क

पर्व के साथ साथ

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

हमारे घर में भी कोई उत्सव या प्रसंग काफी दिनो के बाद आने पर परिवार के सभी लोग खुश हो जाते है।

हम सभी के प्राणपति और पूरे भरतखंड के राजाधिराज ऐसे श्री नरनारायण भगवान के २०० वे प्रागट्य महोत्सव ''पर्व'' आने में कुछ दिन ही शेष बचा है। दिन प्रतिदिन उत्साह बढता जो रहा है न ?

आज श्री नरनारायणदेव के मूर्तियो के संकल्प के विषय में एक रहस्यपूर्ण बात बताना है।

श्री नरनारायण की युग्म मूर्तियाँ-अहमदाबाद के मंदिर में स्थापित की बात संतो और भक्तो की सभा में श्रीहरि द्वारा की गई बात को हम सब जानते है।

परंतु स्वर्गलोक में देवताओ की सभा में यही अपने आराध्यदेव श्री सहजानंदजी महाप्रभुने मूर्ति प्रतिष्ठा की बात किये।

यह गुप्त बात भक्तचिंतामणी में श्री निष्कुलानंद स्वामी वडोदरा के परा प्रकरण १४७ में सरस रुप से आलेखित किये है।

सोनी कुल मां भक्त भलो त्रिकमजी तेनुं नाम, तेनो सुत दयालजी, थाय धारणा देखे धाम ॥ एक दिवस करी धारणा गयोजियां हता जगदीश, तिंया हता बहू देवता, करे स्तवन कोड्य तैत्रीस ॥ तेने महाराजे पूछियुं, मते राजी हो सहुदेव, तो नरनारायण मूरति, पधराविये तत खेव ॥ त्यारे देव कहे बहु सारु, घणुं गमतुं चे अणारु, आ भूमिना ऐज छे भूपति तेनी क्या यनथी जो मूरति ॥ माटे जरुर करवुं ए काज, एम बोलिया खुद समाज, ते दयालजी देखीने आव्यो त्यांनी खबर ते आही लाव्यो ॥

श्रीहरि को सर्वावतारी और सभी कारणो के कारण ऐसे ही नही कहते है। जो कोई भी निर्णय करना होता है। उसके बारे में स्पष्ट पूर्ण पारदर्शक तथा छिपाने की कोई बात नही।

श्रीनगर के मध्य में प्रथम मंदिर बनाने की सहमति सभा में ली गई थी। श्रीनरनारायण की युग्म मूर्ति की स्थापना करना है। इसका निर्णय भी सहमति से किया गया था। लेकिन श्रीहरि स्वर्गलोक के भी अधिपति है। इस लिये तैत्रीस कोटि देवताओ के सामने मूर्ति प्रतिष्ठा की चर्चा करके अद्भूत श्री नरनारायण प्रभु की मूर्ति को श्रीनगर कहे जाने वाले अहमदाबाद के मध्य में स्थापित करने के लिये सर्वानुमति से सुर सभा में पास हुआ था।

देखे ! श्री नरनारायण की अद्भुत मूर्ति हम लोगो को मिली है। सभी देवता भी इस मूर्ति के लिये सहमत हो गये थे। भूमि के भूपति होने के बाद भी इनकी कही पर मूर्ति नही थी। इस मालिक का हम लोगो को प्रतिदिन नित-नये रुप का दर्शन मिलता है।

ऐसा भव्य श्री नरनारायण प्रभु का २०० वाँ प्रागट्य पर्वोत्सव के लिये आनंद क्यो नही ? हम लोग अतिशय भाग्य शाली है।

श्री स्वामिनारायण भगवानने सम्पूर्ण भारत खंड के भूपति ऐसे प्रतापी श्री नरनारायण भगवान हम सबको दिये है। आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को अहमदाबाद देश प्राप्त हुआ। उस समय कुछ उदास हो गये थे। इस शुष्क भूमि पर सत्संग कैसे पूरा होगा ?

उस समय महाराजने विश्वास के लिये कहा कि ''चिंता नही करे, श्री नरनारायणदेव आफ के साथ है। ये है तो सब कुछ आ गया।'' जिस प्रकार श्रीकृष्ण परमात्मा पांडवो के साथ थे। इसके बाद अठ्ठारह अक्षौणी सेना न हो तो क्या ?

ऐसे प्रतापी महाराज का आगामी २०० वे पर्व महोत्सव को पावनकारी बनाने के लिये तन, मन, धन से जो कुछ हो सके योगदान अवश्य करे। इतना तो बनता है ना।

श्री नरनारायण महाप्रभु के अनंत उपकार हम लोगो के उपर है। उनके द्वारा ही यह सत्संग ये धर्मवंशी आचार्य, संत और सभी भक्तो की पहचान हुई है। ऐसी निष्ठा और ऐसी महिमा प्रतिदिन नवीन बना रहे। यह मात्र श्री नरनारायण भगवान की अलौकिक मूर्ति में प्रतिदिन नवीन दर्शन होता रहता है।

''पर्व'' हमारा निमित्त है। भजन-भक्ति विशेष करना है। पर्व के बारे में कुछ विशेष करेगे तो भरतखंड के राजाधिराज अवश्य खुश होगे। उनकी सेवा का अभ्यास ''पर्व'' अंतर में बस जाये। इतना ही दिखाना है।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

राजपुर

संकलन : प्रफुल खरसाणी

एस.टी. के कडी जाने वाले बस से राजपुर जा सकते है। अहमदाबाद से सडक द्वारा १ घंटे, १३ मिनट होता है। अहमदाबाद एयरपोर्ट से ५३ मिनिट लगता है।

यह गाँव कडी तालुका और मेहसाणा जिले में स्थित है। यहाँ पर हरि मंदिर है। यहाँ पर श्रीहरि-चार बार जाकर लीला किये है। भगवान श्री स्वामिनारायण अपने पाँच सौ परमहंस सहित इस गाँव में आकर इस गाँव की भूमि को पवित्र किये है । तथा आश्रित लोगो की मनोकामना पूर्ण किये है।

एक बार श्रीरि माथासूल, तुंडली आदि गाँव में विचरण करते हुए राजपुर गाँव में गये थे। अपने गाँव में श्रीहरि का आगमन सुनकर सभी लोग इकड्ठा हुए। सभी भक्त श्रीहरि को दण्डवत प्रणाम करके फूल हार, चंदन, अक्षत कुमकुम से पूजा करके श्रीहरि को गाँव में लाये थे। राजपुर गाँव को पवित्र करते हुए श्रीहरि पटेल जेठीबाई के घर आये । तथा उस घर के विशाल मंच पर स्वयं बिराजमान हुए थे।

उसी समय दो जयमल नाम के और जगजीवन एवम् त्रिकम ये चारो लोग श्रीहरि के उपर धुल डालने के लिये विचार किये। सभा में चारो लोगो को श्रीहरि बैठे देखकर उडती हुई गौरैया के उपर अपनी दृष्टि डाली। देखते ही गौरैया की गति तथा जीव खत्म हो गया। वह गौरैया जमीन पर गिर गयी। काफी देर तक वह गौरैया बेहोश होकर जमीन पर पडी रही। कुछ समय के श्रीहरिने उस पर दृष्टि डाली पुनः वह गौरैया वहाँ से उटकर चली गयी। श्रीहरि उडती गौरैया को देखते हुए बोले कि अरे दृष्टि हमने ही इस गौरैया का प्राणान्त किये थे। मैं सम्पूर्ण ब्रह्मांड की साँस रोक सकता हूँ। फिर भी कुछ का सम्मान और अपमान पाकर इस लोक में विचरण कर रहा हूँ।

श्रीहरि इस प्रकार जयमल आदि पापी मनुष्यो को समझाये। लेकिन जो झगडा तथा क्लेश करने ही आया हो। उन लोगो के साथ हरखदास पटेल नामक व्यक्ति धनुष-बाण लेकर श्रीहरि के पास आकर खडा हो गया। ये लोग निर्मानी होकर श्रीहरि से कहने लगे कि हे हरि ! यदि आप भगवान हो तो हमारे कुल का नाश करे। तथा हमारे देश में अकाल करो।

उस समय श्रीहरि के पास बैठे हुए। गाँव के अन्य सदस्य दुष्टो से बोले। हे भाईयो ! साक्षात् भगवान के सामने ऐसा न कहे। श्रीहरि अप्रिय वाणी को सुनकर उदास हो गये । श्रीहरि जेठीबाई के मंच से उठकर वस्ताभाई पटेल के घर जाकर आँगन में नीम के वृक्ष के नीचे मंच पर बैठ गये। बाद में श्री स्वामिनारायण भगवान के भक्त वक्ताभाई तथा गोकलभाई एवम् गोदडजी, वजाजी क्षत्रिय भक्त तथा विठ्ठलभाई, कानजीभाई, बहेचरभाई और वीराभाई ये सभी भक्त तथा अन्य लोग

प्रेम से पूजन किये । तथा भोजन कराके अपने जीवन को धन्य किये । इसके बाद श्रीहरि वस्ताभाई के घर से उटी गाँव में बाहर आये । वहाँ पर उनके भक्त वरगद के वृक्ष के नीचे स्थापित मनोहर शैय्या के उपर बैठकर बोले कि सेवको मेरा घोडा लेकर आयो । सेवक लोग घोडे को लाये । इसके बाद श्रीहरि शैय्या से उतर कर चौकी पर बिरामजान हुए । धर्मनंदन श्रीहरि बरगद की डाली दोनो हाथो से पकडकर झुलाये थे । इसके बाद वे घोडे पर चलकर वहाँ से चल दिये । अपने पीछे आते हुए भक्तो को पावस जाने का आदेश देकर वहाँ से डर (डराणा) नामक गाँव में गये । उस गाँव में निवास करने वाले माधवभाई नामक वैश्य भक्त ने भक्ति-भाव से श्रीहरि को प्रणाम किये । उनका पूजन करके तथा श्रीहरि के दर्श; के आकुल वजाणी नाम के भक्त की माता को अपना दर्शन दिये । हराणा गाँव से पुनः राजपुर नामक गाँव में आये । उसी समय भगवान श्रीहरि बजाणी नामक क्षत्रिय के घर आकर उनकी माँ को दर्शन दिये । दूसरे दिन प्रातः खुशाल नामक प्रेमी भक्त की पूजा स्वीकार करके श्रीहरि राजपुर गाँव से कुंडाल गाँव में पधारे थे ।

इसी राजपुर गाँव में श्रीहरि का वैश्य भक्त जयकर्ण रहता ता । जयकर्ण का भगवान दर्शन देकर कहे । हे भक्तराज ! आज से बाहर महीने बाद आप शरीर से मुक्त हो जायेगे । उस समय में आप को लेने आऊगा । श्रीहरिने जयकर्ण से ऐसी बात कही । और जयकर्ण आदर पूर्वक श्रीहरि का पूजन किये । इसके बाद भगवान वहाँ से शीग्र अर्न्तध्यान हो गये । इसके बाद ग्यारह महीने समाप्त हो गये । श्रीहरिने पुनः दर्शन दिया । और बोले हे भक्त ! आज से एक महीने बाद आप शरीर छोड देगे । कोई आवश्यक कार्य करना हो तो पूर्ण कर लो । यह कहकर श्रीहरि तत्काल वहाँ से अर्न्तध्यान हो गये । जयकर्ण अपने भाई-बन्धुओ तथा सत्संगियो को बुलाकर कहा । हे भाईयो एक महीने के बाद हमारी मृत्यु होगी । श्रीहरिने हमको दर्शन देकर ऐसा बोले है । इस कारण संतो को रहने के लिये हम आने वाले कल से मंदिर बनाने के लिये तैयार रहे । सभी भक्त अच्छा कहे । और आदरपूर्वक बोले, कि जो भक्त नही है । उसे यह बात मत कहे । इसके बाद श्रेष्ठ भक्त जयकर्ण सत्संगियो के साथ मिलकर मंदिर निर्माण शुरु कर दिये । श्रीहरि के द्वारा बताये गये समय की समाप्ति होने के पूर्व जयक्रण अपनी पतिव्रता पत्नि से बोला कि तुम श्रीहरि के ब्रह्मपुर में आगे जाये । आप को श्रीहरि अवश्य लेने आयेगे । अर्न्तयामी प्रत्यक्ष श्रीहरि मुझे लेने हेतु कल अवश्य आयेगे । हम श्रीहरि के साथ श्रीहरि के अक्षरधाम में जायेगे । जयकर्ण की पत्नि होकर श्री स्वामिनारायण भगवान का नाम स्मरण करने लगी । श्रीहरि दिव्य विमान में बैठकर जयकर्ण की पत्नि को लेने आये । उसे विमान मैं बैठाकर अक्षरधाम में ले गये ।

बुद्धिमान जयकर्णने श्रीहरि के भक्तो के साथ मिलकर अपने पत्नि के मृतक शरीर का अन्तिम संस्कार किया । दूसरे लोग दिव्य विमान में बैठकर श्रीहरि, दिव्य विमान में दिव्य अक्षर मुक्तो के साथ आये । बाद में जयकर्ण मुक्तो से धिरे हुए श्रीहरि के दर्शन से खुश हुए । उनके साथ बैठे हुए भाई-बन्धु सत्संगियो से बोले हे भक्तो ! भक्तवत्सल श्र्व्हरि दिव्य विमान में बैठकर अपने पार्षदो सहित मुझे लेने आये है । इस कारण से मैं अपने पुत्र को साथ लेकर श्रीहरि के साथ उनके दिव्य प्रकाशमान ब्रह्मपुर धाम में जायेगे । हे भक्त सर्वावतारी और उनके आश्रित को सदैव शांति देने वाले श्रीहरि हमेशा भजन करियेगा । श्रीहरि अपने अलौकिक ऐश्वर्य को लोगो को बताते है । इसके बाद जयकर्ण भक्त 'जय स्वामिनारायण' इस प्रकार कहकर अपनी शरीर का त्याग करके दिव्य तेजोमय स्वरुप को प्राप्त हुआ । सभी सत्संगियो के देखते-देकते यह भक्त श्रीहरि की आज्ञा से सूर्य समान कांतिवाले विमान में बैठ गया । उसी प्रकार उसका पुत्र शरीर त्याग कर भगवान के साथ ब्रह्मपुर में चला गया । श्रीहरि के अत्यंत माहात्म्य को प्रेम पूर्वक गाने लागे ।

इस प्रकार श्रीहरि दंढाव्य देश में आये । राजपुर गाँव की भूमि के अपने चरणरज के द्वारा पवित्र करके आश्रितो को अपने अक्षरधाम में अवर्णनीय सुख देकर जन्म-मरण से रहित किये है ।

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से
अमृतवचनो

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापूनगर)

प.पू. लालजी महाराजश्री २४ वे प्रागट्यत्सव के अवसर पर

प.पू. बडे महाराजश्री (अहमदाबाद मंदिर सभा मंडप ता. ३-८-२०२१) : आज का दिन हमारे परिवार के लिये ही नही बल्कि समस्त सत्संग समाज के लिये महत्व का है। हमारे बापूजी के समय पर एक सत्संगी शेठ थे। वह प्राय बापूजी से कहते थे कि सिर को उल्टा करके सोपारी के उपर लगभग १०० वर्ष की तपश्या के बाद ही यह पद प्राप्त होता है। आज के अवसर पर लालजी महारजश्री के बचपन की दो बात याद आ रही है। प्रथम जब इनका प्रथण जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। तब ये हमारी गोद में सभा मंडप में थे। उस समय हमारी गोद में से बार-बार पीछे देख रहे थे। हमको विचार आया कि यह बार-बार पीछे क्यो देख रहा है ? सोचने पर उसका रहस्य का ज्ञान हुआ। रहस्य यह है कि बार-बार देखना कि मैं दादा के ही गोद में हूँ ! दूसरे के गोद में तो नही ? अर्थात् गोद बदल तो नही गया। इस घटना से हमें यह सिखना है कि गोद कभी बदलना नही चाहिए। (गूढ अर्थ है समझे) हमारे नंद संत हमेशा बोले है कि लगातार पीछे मुडकर हम क्या करने आये है। कहाँ है और क्या करना है।

दूसरी घटना यह है कि हमारे निवास स्थान के बगीचे में फूल को चुनकर पार्षद लोग प्रतिदिन ठाकुरजी के लिये हार बनाने के लिये बैठते ते। हमको एखबार इच्छा हुई की यहाँ पर फोटो खीचे। वहाँ जाने पर ध्यान नही रहा कि जिस चद्दर का उपयोग बिछाने के लिये किया जाता था। उस चद्र पर हमारे पैर पड गये। तभी लालजी महाराज बोले कि दादा ! इस चद्दर के उपर पैर नही रखे। भगवान के दोषी होगे ! तभी हमें लगा कि पाँच-सात वर्ष का यब बालक कही से यह सीखा तो नही होगा। लेकिन यह तो सीख कर ही आया है।

इस पद पर रहकर हमेशा आशीर्वाद देना पडता है। लेकिन जन्म दिवस का पर्व ऐसा है कि आज के दिन आप सभी से आशीर्वाद लेने का दिनहै। इस कारण से आज आप सभी महाराज के चरणो में प्रार्थना करना की ये तेजस्वी और सक्रिय बने। ''पर्व'' उत्सव की जिम्मेदारी इन्होने ली है। अधिक मेहनत करे। सभी संत हरिभक्तो को साथ में रखकर पर्व के माध्यम से वह सत्संग की प्रगति करे। भविष्य में अहमदाबाद गद्दी के एक आधर्श आठवे आचार्य के रुप में समर्थ बने। इनका स्वास्थ्य उत्तम रहे यही आज के दिन श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज का जन्म दिवस के अवसर पर हमे सबको आशीर्वाद लेना होता है। तब प.पू. महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्री तता पूज्य गादीवालाश्री का आशीर्वाद सहज रुप से मिलता है। लेकिन इतनी बड़ी संख्या में संत तथा हिरभक्त आज के दिन हमे आशीर्वाद देने के लिये आये है। सभी को अधिक

धन्यवाद ! हम सब नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करे । कई वर्षो से महाराजश्री सत्संग की सेवा करते आये है । जो परिश्रम करता है । बड़े बापजी वर्षो तक सत्संग के उत्कर्ष के लिये परिश्रम किये है । उनकी ५०% की शक्ति अगर महारजा मुझे देगे । तो मैं अपने को भाग्यशाली समझूगा ।

आपने पर्व की तारीखनिश्चित की है । लेकिन वर्तमान समय में अनिश्चितता बनी हुई है । हम लोग प्रतिदिन चेष्ठा के पद गाते है । एक पंक्ति स्थायी याद करते थे । ''मारी मरजी बिना रे, कोई थी तरणुं न तोडाय'' उत्सव नरनारायणदेव का है और देव की ईच्छा होगी । तभी उत्सव होगा । जब तक महाराजश्री की ईच्छा नही होगी तब सफल नही होगा । अपने पर्व के उपलक्ष्य में गाँव-गाँव अपनी क्षमता के अनुसार सभा प्रारम्भ कर दिये है । वर्तमान समय पर अवश्य ध्यान दे । सावधानी रखकर कर आयोजन करे इसी में भलाई है । कारण कुछी भी हो हम लोग आज देव के दर्शन के लिये एकत्र हुए है । आज यही प्रार्थना करते है कि सत्संग करने की शक्ति महाराज हम सब को प्रतान करे ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री : सीढी पर चढना अति कठिनहै । देव के बच्चे है । इसलिय देव का दर्शन किये । इससे देव विशेष बल देते है । वृद्धो पर ध्यान दे । आपस में प्रेम से रहे । यह मराजा के वचन है कि नहीं ? महाराज ने भी इस मंदिर मं अपने साथ माता-पिता धर्म-भक्ति की स्थापना किये है । यह कोई प्रतीक नही है । यह वास्तविकता है । सभी लोग बनाते है । चार दिवार और आठ मंजि हो जाने से घर नही हो जाता है । लेकिन कईबार की न बनाता है ? परिवार इसी प्रकार से बनता है । ये बगल मे बैठे संत, इस तरह बैठे हुए हरिभक्त ये सभी मिलकर परिवार बनते है । यहाँ पर बैठे सत्य परिवार हो । आज के परिवार में **Selected Malterpeice** । (यह एक उत्तम शब्द कृपा दर्शाने वाला शब्द है । देव में आप की निष्ठा है । ममत्व है । इस लिये भगवान आप का ध्यान रखते है । अभी लालजी ने ५०% की बात कहे है ५०% क्या ? महाराज १००% शक्ति देगे । हम तो बैठे ही है । चिंता कहा करना है ? सम्प्रदाय को लगता है, जो संत-हरिभक्त जो देव के आश्रय में है । उनकी चिंता देव को होती है । बात सीढी चढने से शुरु की है । आज भी कई लोग मंदिर में आते है । लेकिन सीढी पर नही चढते है । हमने देखा है । आप भी शायद देखे ही होगे प्रोटोकाल है इस लिये संक्षिप्त में कहना है । कोई हम लोगो की तरफ ऊँगली उठाये तो संस्था और दे तो अपने है । ाप का तथा आपके परिवार का अहित न हो । इस लिये हाथ जोडकर कह रहा हूँ । थोडा दूर रहे । जो जानकारी हो वही कहे ।

इस देव की महिमा का वर्णन करना हमारी क्षमता **Capacity** से बाहर की बात है । देव के सामर्थ्य की कई इकाई नही है । अधिक-अधिक कहकर अन्त में रुकना पडता है । ऐसे ये बलवान देव है । इस मंदिर का इतिहास आप सभी जानते है । अंग्रेजोने इसे मठ-स्तानक शब्द दिया था । ईस्ट इंडिया कम्पनीने अपने अधिकारियो के द्वारा मंदिर को लीज पर देने की बात कही थी । महाराज ने कहा, मंदिर नही बनाना है । महाराज को एक रुमाल का वजन भी नही अच्छा लगता था । इस लिये यह समस्या कौन मोल ले इसके बाद भी स्थाई दस्तावेज का प्रबन्ध करके आप को और हमे सुखी करने के लिये मंदिर बनाये है । यह एक अकेला मंदिर है जिसे महाराजने स्वंय बनवाया है ? स्वयं का अर्थ किसी भी हरिभ्कत के प्रार्थना बिना स्वनिर्णय लेकर ये मंदिर बनवाये है । शेष मंदिर हरि भक्तो के आग्रह पर मंदिर बनाने की अनुमति दिये है । और यह इतिहास गोरधनभाई । खोजे आप ! पढे कि (आज्ञा से यह लेख शामिल है ।) यहाँ पर बैटे अधिक संत भी जानते है । छोटे-बडे प्रत्येक संत विद्वान है । श्रय महाराजश्री का प्रिय मंदिर है) इसकी महिमा बताना हमारी शक्ति से परे है । दूसरा और भी महाराज का जन्म स्थल भी हम लोगो के हिस्से में आया है ।

हम लोगो के हाथ में श्री नरनारायणदेव की प्रसादी की मूर्ति हो ऐसी पेन्टिंग वाली मूर्ति देखकर पू.म हाराजश्री बोले, एक बाद अधिक हृदय स्पर्शी है विना अपे७ के जिस परिवार की छोटी बच्ची इस मूर्ति को रंगा है। उसका परिवार उसे कैसा वातावरण दिया होगा। लोग कितने को धोखा दे देते है। वास्तव में हमें कही धोखा ही नही करना है। भगवानने हम सभी को सब कुछ दिये है। २१२ श्लोक में सब कुछ आ जाता है। सर्व प्रथम तो मुक्तानंद स्वामी भी भूल गये। ये तो अभी आये है। और सभी को समाधि कराते है। तो कैसे माने ? वास्तविकता है कि नही ? इतिहास को मथना या पुनरावर्तन करना यह मूर्खता है। लेकिन इतिहास को जानना ज्ञान कहा जाता है। उस बच्ची को यह ज्ञान परिवार से मिला होगा। बनाने वाला पूरे मनोभाव से चित्र को रंग से भरा है। जिसकी कीमत नही लगाई जा सकती है। यह उसका पुरुषार्थ है। लालजी महाराजश्री के जन्म दिवस पर आप सब कुछ छोडकर देव के दर्शन हेतु आप सभी लोग आये हुए है। इस पर धन्यवाद का हक तो बनता है। जो देव का है वह संत और भक्त देव के लिये पुरुषार्थ तो करता ही है मैं किसी को आशीर्वाद नही देता हूँ। आशीर्वाद देने वाले एक ही (नरनारायणदेव) है। उनकी प्रार्थना करे। सब कुछ प्राप्त होगा। और अपने पास क्या नही है ? हम दोनो समय भोजन प्राप्त करे इतना ही नही देव से जुडने के बात बहुत कुछ मिला है। संत लोग पुरानी प्रणाली में जो लिखते थे। हमारा नारायण पठे। महारजने लिखवाया है। आप सभी देव का बनकर रहे। और हमेशा देव के ही है।

लालजी महाराज को महाराज अधिक शक्ति प्रदान करे। और देगे भी क्योकि वे हमारे बाद है। इस लिये अधिकार से कर रहा हूँ। हम लोगो जितना सुखी कोई नही है। दृष्टि धुमाकर अपने चारो रफ देखे। शांति से सोचे। हम लोगो के समान किसी के पास कुछ है भी कि नही। आप कल्पना करे। आप के साथ कोई सामना कर सकता है क्या ?

मैं शासन प्रिय नही हूँ। श्वास देने वाला हूँ। यह अब मुझे विचार आया कि ऐसा ड्रेस बनाने वाले दर्जी अधिक नही है। कहाँ के है। वह हमें पता चल जाता है।

लालजी का अवलोकन **Observation** अधिक रसप्रद है। मोटा बापजीने उनके गुण को बताया। यह अधिक है। उसमें चतुराई **Skill** हमारे में नही है।

उनके कहना छ महीने पहले का होता है। तो उसका परिणाम छ महीने मे दिखाई दे देता है। क्योकि वे देव के पुत्र है। आप सभी देव के है। लेकिन हमारा जुडाव आप से अधिक है। आप सभी सुखी रहे। आप सभी थोडा ध्यान दे। परिवार पर ध्यान दे। अभी पूरा नही हुआ है। पानी-पुरी की लारी पर तो हमे नही जाते है। लेकिन जो लोग जाये वह अवश्य ध्यान दे। घंटे भर पंक्ति में खडे रहने से उइचित है कि घर पर साधारण खिचडी का भोजन ग्रहण किया जाये। खटिया और पलंग पर आनंद है। आप सभी दैर्य वाले यहाँ पर आये है। अधिक भीड से अच्छा धैर्य से किनारे रहना अच्छा है। इस तरह के लोग हमे प्रिय लगते है। एक गाँव में हम मात्र पाँच लोग सभा के मंच पर बैटे थे। तीन लोग सबा में बैठे थे। हमने सभा शीध्रता से पूर्ण नही किया। भगवान की बात किये। भगवान के चरित्र को बताये। सम्प्रदाय में कभी भी देव के लिये समाधान नही करते है। महाराज के बचन में पूर्ण विराम है। हमारी अपनी धरोहर है। घर में वातावरण बनाये। उपदेश काम नही करता है। वातावरण देने से स्वयं सीख जाते है। आराम दिये है। महाराजने वातावरण भी दिये है। श्वास भी दिये है। मानवता का सिद्धान्त दिये है। उन्ही पर इस सम्प्रदाय का नीड है। यह आधार है।

महाराज दर्शन करने कभी विना फाईल के जाये। आप कहई बार लोगो से कहते है कि मैं आप से केवल मिलने आया हूँ। तो महाराज के सामने स्थायी एजेन्डा नही रखे। देव का दर्शन करे। यही सत्य दर्शन कहा जाता है। ऐसा हमारा मानना है। महाराज आप सभी को अधिक सुख दे। ऐसा किये भी है। और करते भी रहेगे। इन्ही प्रार्थना के साथ धन्यवाद !

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

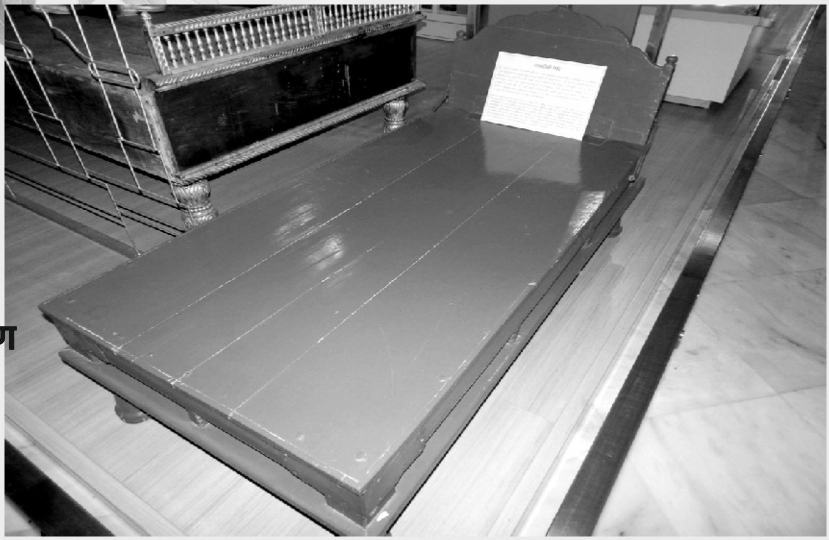

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

– प्रफुल खरसाणी

समय की घडी में और अपने अंदर दो प्रकार से बितता है। घडी के समय बदलने पर क्लेन्डर बदलता है। हमारे समय व्यतीत होने में एक संस्कृति का विकास होता है। यह बनी संस्कृति अर्थात् अपना सम्प्रदाय है। आज से दो सौ वर्ष पहले विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री स्वामिनारायण भगवान ने स्वयं श्री नरनारायणदेव की प्राण प्रतिष्ठा करके मुमुक्षुओ के लिये मोक्ष का सदावर्त खुला छोड दिये है। श्री नरनारायणदेव और ऐतिहासिक मंदिर का २०० वर्ष का समय बिताते है। इसका आने वाले वर्ष में अर्थात २०२२ में ''पर्व'' नाम का उत्सव मनाया जायेगा। ये मात्र सर्व प्रथम मंदिर ही नही एक व्यवस्था की शुरुआत हुआ। मंदिर में आने वाले दान और मरम्मत का खर्च तथा प्रबन्ध के लिये एक विचार प्रणाली महंत पद रुप से प्रारम्भ हुई है। सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के सबसे पहले वाले महंत पद पर स.गु. सर्वज्ञानंद स्वामी की नियुक्ति श्रीहरिने स्वयं किये थे।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में हॉल नं. ५ में रखा हुई इस चौकी पर सर्वप्रथम महंत स.गु. सर्वज्ञानंद स्वामी मंदिर का प्रबन्ध सम्भालते और शास्त्रो तथा श्रीहरिचरित्र भी मुमुक्षुओ को सुनाते ते। उस समय सभा मंडप में हवेली मुख्य दरवाजा नही था। इस लिये दरवाजा के बगल में छत्री की जगह चौकी रखकर श्रीजी महाराज अहमदाबाद आते थे। तो स्वयं स्वामी कथा सुनते थे। यही कथा वार्ता की प्रणाली आज भी कालुपुर के साथ हमारे मंदिरो में लगातार चालू है।

प.पू. मोटा महाराजश्रीना स्वरवाळी कोलरट्युन (फक्त वोडाफोन धारको माटे)
प.पू. मोटा महाराजश्रीना स्ववचनवाळी कोलरट्युन मोबाईलमां डाउनलोड करवा नीचे मुजब करवुं.
मोबाईलमां ct>स्पेस> 270930 टाईप करी. 56789 नंबर पर SMS करवाथी कोलरट्युन शरू थशे.

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

अपने श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में अब से होल नं. १२ में श्री नरनारायणदेव देश गद्दी के संत-हरिभक्त कथा-वार्ता का आयोजन कर सके। ऐसी व्यवस्था की गई है। जिस प्रकार मंदिर में देवका थाल और रसोई दी जाती है। उसी तरह म्यूजियम के होल नं. ८ में प्रस्थापित श्री नरनारायणदेव के थाल-रसोई का आयोजन किया जाता है। जिसके लिये म्यूजियम के आफिस से सम्पर्क करे।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची अगस्त-२०२१

दि. ०३-०८-२०२१	प.भ. कमलेशभाई केशवलाल पटेल - भाउपुरा
दि. ०८-०८-२०२१	(प्रात) प.भ. दयालजीभाई टांक - जीरागढवाला (मुंबई)
	(दोपहर) प.भ. लक्ष्मणभाई मावजीभाई पटेल - साधली
दि. ११-०८-२०२१	श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कालुपुर हवेली
दि. १५-०८-२०२१	प.भ. रमेशभाई सोमाभाई पटेल - इटादरावाला (नवा वाडज)
दि. १७-०८-२०२१	प.भ. प्रदीपभाई वी. कच्छी - निकोल
दि. २०-०८-२०२१	प.भ. शैलेषभाई शकराभाई पटेल - आनंदपुरा - ह. जितेन्द्र, शिव, मीरा, देव, मनली, शकराबापा परिवार
दि. २५-०८-२०२१	रवजीभाई वी. पटेल - प्रगतिनगर, नारणपुरा - ह. अंकित
दि. २८-०८-२०२१	श्रावण मास के अवसर पर समूह महापूजा म्युजियम
दि. ३१-०८-२०२१	अ.नि. डॉ. रमणभाई मगनलाल पटेल की ५० वी पुण्यतिथि के अवसर पर - ह. परेशभाई (प्रेमसयी) वडूवाला

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि- अगस्त-२१

रु।. १,००,०००/-	प.भ. घनश्यामभाई कुबेरदास पटेल (विहारवाला) - शाहीबाग
रु।. ५१,०००/-	प.भ. पटेल डाह्याभाई नारणभाई (माणसावाले)

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सुखी वही है जिसके पास सत्संगरुपी 'धन' है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

कहा जाता है कि 'रवि बिनु जाय न रात' रात्रि कब समाप्त होती है ? अधंकार कब दूर होता है ? सूर्योदय होने पर जब आकाश में सूर्य की किरणे "फैल जाती है । हम लोगो को पता चल जाता है कि अब सूर्योदय होने वाला है। सूर्योदय होने के बाद चन्द्रमा और तारो की रोशनी समाप्त हो जाती है । इसी प्रकार हमारे जीवन में अंधकार कब दूर हो जाता है । अपना कल्याण कब होगा ? तो हमारे जीवन में परमात्मा की कृपा से सूर्योदय होता है । सम्पूर्ण कृपा कब होती है ? जब भगवन की कृपा होने की तैयारी होती है । तो हमे इसका आभास होने लगता है । कैसे ? अपना अन्तःकरण शुद्ध होने लगता है । यह दोष सत्संग के माध्यम से दिखाी देने लगता है । आप का विश्वास किसी भी अवस्था में ईस्वर के प्रति डगमगाता नही है । तब हमे समझ लेना चाहिए कि अब हम आध्यात्मिक मार्ग पर बढ रहे है । हमारे उपर भगवान की कृपा होने वाली है । यह सब सत्संग के माध्मय से प्राप्त होता है । नही तो हम बाहर व्यवहारिक जगत में किसी भी व्यक्ति को कहे की आप अन्दर से सब कुछ शुद्ध करे । तो वह स्वीकार नही करेगा । सबको अंदर से शुद्ध ही लगता है । यदि हम ध्यान से विचार करे तो यह सब सत्संग के माध्यम से शुद्ध होता है । इससे अपना व्यवहार सुधरता है । हम कहते है कि सब कुछ भगवान की ईच्छा से हो रहा है । लेकिन इसमें मनुष्य का भी सहयोग होता है । भगवान ने प्रति व्यक्ति दो प्रकार की शक्ति दिये है । स्वेच्छा शक्ति और स्वतंत्रता की शक्ति ये दो वस्तु भगवान मनुष्य को देकर भेजे है । उपयोग करना मानव के हाथ में है । अच्छा उपयोग करने वाला अच्छा व्यक्ति नही तो मानव 'दानव' बन जाता है । सभी का स्वभाव अलग-अलग होता है । यह उसकी प्रकृति पर आधारित है । मात्र भगवान की ईच्छा से सब कुछ होता है तो खराब शक्ति भी दिये है । जीवन किस तरह से व्यतीत करे ? जिस प्रकार दर्पण, पादर्शक होता है । उसी प्रकार शास्त्र और सत्संग दर्पण के समान होते है । जो मन, वचन, कर्म की त्रुटियो का आभास कराता है । अपने गंदे मन को भी दिखाता है । यह दूसरे को पता नही चलता है । ऐसा मन अपने को दिखाई देता है । जिस प्रकार दर्पण में देखकर अपना श्रृंगार कर लेते है । उसी प्रकार सत्संग के माध्यम से हम अपनी अंदर की गंदगी को दूर करते है । और अन्तःकरण की सजावट कर लेते है । इसके लिये शास्त्र और सत्संगकी आवश्यकता होती है । भगवानने यह सब प्रदान कर दिया है । उसका उपयोग कैसे करना है । यह अपने उपर है । लेकिन मानव क्या करता है ? परमात्मा के बताये मार्ग पर न चलकर अपने बुद्धि के मतानुसार कृत्य करते है । यही संसार में विषमता का कारण है । भगवान प्रयोजन करता है । प्रयोजन कर्ता उसका उपयोग करता है । उदाहरणार्थ गेहूँ एक बीज है । उसे हम बोरे में भर रखते है । तो वह अंकुरित नही होता है । भूमि, जल, वायु, पोषण तत्व के मिलने के बाद ही अकुरित होता है । उसका उपयोग कहाँ करना है । उस पर निर्भर करता है । परमात्मा सभी बीज मे समान शक्ति दिये है । उसी प्रकार हम सभी के अदंर चैतन्य रुपी शक्ति है । वह एक समान है । प्रकृति प्रत्येक की अलग-अलग होती है । लोग अपने प्रकृति के हिसाब से उपयोग करते है । मानव का उपयोग रुप गुण अवगुण में दिखाई देता है । हमारी पात्रता के अनुसार गुण-अवगुण होता है । दूसरे उदाहरण को समझे तो जैसे

विजली होती है। उसके द्वारा कुछ लोग कूलर चलाते है। तो कोई ए.सी. चलाता है। कोई अज्ञानता के कारण उससे घायल या मर तक जाता है। शक्ति को समान है। लेकिन उसका उपयोग अलग-अळग है। इस लिये उपयोग हमेशा सोच - विचार कर करना चाहिए। हमारे पास शास्त्र रुपी हथियार है। जो अंदर के शत्रु को मारता है। बाहर वर्षा हो रही हो और हम छाता लेकर जाये तो वर्षा थोडे ही बंद होगी। लेकिन छाते से हमे रक्षा प्राप्त होती है। हम भक्ति करते है तो उससे दुख और ये सब जीवन से हट नही जाते है। यह सब घटना होती ही है। लेकिन हमे भक्ति से रक्षा मिलती है। महाराजने कभी नहीं कहा है कि दुःख के बिना आफको जीवन देगे। लेकिन दुख में से कैसे पार होगे उसका मार्ग बताये है। जीवन में सुख दुःख तो आना ही है। पूरे ब्रह्मांड में हम लोगो का अच्छा सुख मिला है नरनारायण के चौक में बैठकर भगवान का नाम लेने से मिला है। यदि इसका मूल्य हमे समझ में आ जाये तो समझे आप नरनारायण के सानिध्य में बैठे है। जिस प्रकार हिरण की नाभी में कस्तुरी मिलता है। उसके लिये ईघर-उधर दौडता है। यह अच्छी सुगंध कहाँ से आ रही है। हमे हिरण की तरह भाग दौड नही करना है। कस्तुरी की सुगंध लेने कही नही जाना है। वह यही से प्रसरित होती है। जीवन में कभी विचलित नही हो। कुछ रोग के लिये एक ही दवा लम्बे समय के लिये प्रयोग करना पडता है। तब जाकर वह समाप्त होता है। इसी प्रकार हमारे अंदर अवगुण रुपी रोग भर गया है। हमारे जीवन में थोडा दुःख भी होना आवश्यक है। नही तो व्यक्ति अहंकारी हो जाता है। कुछ लोगो को कम समय में उपलब्ध मिल जाती है। ये लोग ही अहंकारी हो जाते है। मैने किया, मुझे मिला, हमने अपने परिश्रम से प्राप्त किया है। इस प्रकार अहंकार को संतोष प्राप्त होता है। इस तरह वह भगवान से दूर होता जाता है। कुछ समय के लिये अच्छा लगता है। ये सफलता आगे चलकर पराजय का स्वाद चखाती है। कई बार कार्य में असफलता जीवन में ''सरलता'' ला देती है। यही पराजय आगे जाकर सफलता प्रदान करती है। भगवत प्राप्तिरुपी 'विजय' प्रदान करती है। इस लिये प्रत्येक कार्य के साथ भगवान को साथ में रखे। महाराज से प्रार्थनर्करे। मै आने वाले समय में सभी कार्य अच्छे से पूर्ण करु। इस प्रकार की शक्ति की याचना करना चाहिए। महाराज आप सभी को ऐसी शक्ति प्रदानक रे। ऐसी महाराज के चरणो में प्रार्थना करता हूँ।

जेतलपुर में दर्शनार्थियो के लिये पार्किंग व्यवस्था

समस्त सत्संग को विशेषकर सूचित करना है कि अपने जेतलपुर मंदिर में पूर्णिमा के दिन और रविवार के दिन दर्शनार्थीयो की अधिक भीड हो जाती है। वाहनो की पार्किग व्यवस्था गुरुकुल रोड के पास मंदिर की जगह में विशाल पार्किंग क्षेत्र बनाया गया है। इसलिये पूनम तथा रविवार को आने वाले भक्त वहाँ पर पार्किंग करे।

सम्प्रदाय के गौरव

डॉ. श्री अविनाशभाई भरतभाई पटेल (एम.डी.) (गोल्ड मेडलिस्ट) (मूल पारणपुरा गाँव) वर्तमान समय मे कडी खाते भाग्योदय जनरल अस्पताल में पीडियाटी शयन के रुप में सेवा दे रहे है। वे कुछ समय पहले अपनी विशेष सूझ-बूझ से और योग्य निदान से नवजात गरीब परिवार की बच्ची को श्वास लेने में कष्ट था। चलना फिरना, रो भी नही सकती थी। फेफडा भी क्षति ग्रस्त था। उसकी अच्छी दवा करके स्वस्थ कर दिये। वे. प.पू. बड़े महाराजश्री के पास प्रातः पूजा करके आशीर्वाद लिये है। श्री नरनारायण के प्रति निष्ठावान है। जिसे हम सबको गर्व है। डॉ. अविनाशभाई लगातार प्रगति करे इसके लिये प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की अर्न्तकरण पूर्वक आशीर्वाद देते है।

अक्षरवास

जेतलपुरधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में कई वर्ष से श्रीहरि का ध्यान, भजन, स्मरण करते हुए। स.गु. शास्त्री स्वामी भक्तिवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वाामी कृष्णचरणादसजी (उम्र ७६) श्रावण सुद-५ शुक्रवार ता. १३-०८-२०२१ के दिन सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करते अक्षर निवासी हुए है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अलौकिक हिंडोला दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से और अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के विद्वान कथावाचक पूज्य महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से पवित्र श्रावण मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव समक्ष सुखा मेवा, शाकभाजी, फूल, फल, रक्षाबंधन, पवित्रा, अनाज, दाल आदि अनेक प्रकार के नये हिंडोला बनाकर श्रीहरि बालमुकुंदजी ने शाम को झूलाया जाता था। संत हरिभक्त सभी लोग अलौकिक दर्शन करके स्वयं धन्यवाद के पात्र हुए। अषाढ सुद-२ से श्रावण वद-२ तक पूरे महीने हिंडोला का कार्यक्रम चला था।(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

प.पू. लालजी महाराजश्री का २४ वाँ प्रागट्योत्सव भव्यता और दिव्यता से मनाया गया
जीवेम् शरदः शतम्

श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से भगवान श्री स्वामिनारायण के आठवे वंशज प.पू. भविष्य के आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का २४ वाँ प्रागट्योत्सव दिनांक ०३-०८-२०२१ के दिन प्रातः अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री शुभ सानिध्य में तथा धामो-धाम से आये हुए। अधिक संख्या में ब्रह्मनिष्ठ संत और हरिभक्तो की उपस्थिति में कोरोना महामारी की सरकारी गाईडलाईन के नियमो का पालन करके भव्यता से मनाया गया है।

सर्व प्रथम श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप ने निज मंदिर में तीनो डेरा में श्री नरनारायणआदि स्वरुपो का श्रृंगार आरती उतारकर दर्शन करके सभा मंडप में बिराजमान हुए थे। स्वामी श्री निर्गुणदासजी के सभा संचालन के द्वारा मंदिर के भूदेवने प.पू. लालजी हमाराजश्री का वेद मंत्रो के साथ स्वस्तिवाचन के साथ पूजन-अर्चन किये थे। पू. महंत स्वामी सभी की तरफ से श्रीहरि के तीनो स्वरुपो को चमेली का माला पहनाकर जन्म दिन की शुभेच्छा व्यक्त किये थे। इसके बाद जन्मोत्सव के यशस्वी यजमान प.भ. श्री संयभाई रमणीकभाई सोनी तथा चि. पुत्र अर्जुन ने पुष्प गुच्छ दिये थे। अग्रगण्य युवक संत, ट्रस्टी तथा अग्रणी हरिभक्तो के साथ रहकर आरती उतारे थे।

प.पू. महाराजश्री तता प.पू. लालजी महाराजश्री ने लेटेस्ट टेक्नलोजी से सत्संग के उत्करष के लिये अधिक उपयोगी हो सके। ऐसा अभिगम रखकर पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन से बर्च्वयल रीयेलिटी (वी.आर.) के कान्सेक्ट के साथ खोडियार ग्रुप आफ कम्पेनीत के हेक टेक्नोलोजी के डायरेस्टर के द्वारा तैयार पाँच मिनट का विडियो शो का पम्पलेट से श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो का हस्त से विमोचन किये थे। सम्पूर्ण कान्से पट तथा उसकी उपयोगिता पू. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने समझाया था।

पश्चिमी देश में अपने कई मंदिर है। वहाँ की संस्कृति का सम्मानदेकर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोगी भावना पूरी करने के लिये केक काटकर भगवान का जयघोष के साथ उत्सव की पूर्णाहुति की गयी।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

"पर्व" महामहोत्सव के उपलक्ष्य में अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सामने श्री जनमंगल पाठ अनुष्ठान

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से अपने श्री नरनारायणदेव के ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में शहर और गाँवो के शिखरबध्ध हरिमंदिरो में धार्मिक और सामाजिक प्रवृत्ति लगातार चालू है।

अपने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में स.गु. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी के मार्गदर्शन के अनुसार परमकृपालु श्री नरनारायणदेव सन्मुख श्रीहरि को प्रिय जनमंगल पाठ का अनुष्ठान पवित्र श्रावण महीने में ता. ९-८-२१ से श्रावण वद अमावस्या ता. ७-९-२१ तक संतो ने ६-३० से ७-३० प्रातः से लगातार किया गता।(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) मंदिर में २०० घंटे की अखंड धुन

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से जब श्री नरनारायण भगवान की प्रतिष्ठा के २०० वर्ष पूरे होने जा रहा है। तब प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद पर मनाया जाने वाला आगामी ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में सर्व प्रथम स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी और स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी तथा महंत शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से उसी प्रकार युवक मंड तथा सत्संग समाज के आयोजन से मंदिर के विशाल सभा मंडप में ता. ७-८-२१ से प्रातः के ८ बजे से प्रारम्भ ता. १५-८-२१ शायं ५ बजे तक अखंड २०० घंटे तक की धुन प.भ. श्री वल्लभभाई पोपटभाई खीचडीया परिवार के यजमान पद से पूर्ण किया गया। धुन की शुरुआत अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी तथा पोरडा गांधीनगर से-२ नारायणघाट, जूनागढ आदि धामो से आये पाँव श्रेष्ठ ब्रह्मनिष्ठ संत तथा यजमानश्री के हाथो द्वारा दीप प्रगट

किया गया । पू. निर्गुणदासजी स्वामी के आशीर्वाद से हुआ था । दोपहर १ से शायं ७ की पाली में बहनो ने धुन गाया था । रविवार के दिन नरोडा तथा लसुन्द्रा के युवक मंडल तथा कालुपुर मंदिर का धुन मंडल एक दिन धुन में भाग लिया था । धुन के शुरुआत और समाप्ति तक हरिभक्त एक समान संख्या में आकर उत्साह पूर्वक किये ते ।

ता. १४-८-२१ के दिन प्रातः ९-३० पर प.पू. लालजी महाराजश्रीने सतं मंडल के साथ आकर सभी को आशीर्वाद दिये । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी में चरणारविंद का अनावरण धुन तथा महापूजा

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा प.भ. दासभाई की प्रेरणा से आगामी पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १५-८-२१ के दिन प.भ. अरविंदभाई आर. दोंगा के मुख्य यजमानपद से समूह महापूजा तथा प्रात ६ से दोपहर ११-१५ तक अखंड पाँच घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन गाई गयी ।

हर्षद कोलोनी मंदिर की श्री नरनारायणदेव का सिंहासन प्रसादी संगमरमर पथ्थर मिला है । इस पथ्थर में से बनाया गया श्रीहरि के चरणारविंद और छत्री में स्थापना की गई है । बहनो को दर्श; का सुख देने के लिये महापूजा की पूर्णाहुति में आये हुए । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के चरणकमलो की पूजन आरती करके अनावरण किया गया था । धुन की पूर्णाहुति मे आये अहमदाबाद मंदिर के पू. शा. स्वामी निर्गुणदासजीने चरणकमलकी छत्री पर ध्वजा आरोहण करके दर्शन हेतु खोले थे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

जेतलपुरधाम में पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा

जेतलपुरधाम में बिरामजान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में पवित्र सावन मास में प्रसादी के स.गु. आनंदानंद स्वामी सभा मंडप में पूरे सावन महीने शायं ५ से ६ बजे तक श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रन्थ की कथा सुंदर श्रवण स्वामी, घनश्यामजीवनदासजी ने किया । यहाँ के ग्रामवासी सभी हरिभक्त कथा को सुनकर धन्य हुए ।(महंतश्री के.पी. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वर्ष पूर्ण होने पर ''पर्व'' उत्सव के अन्तर्गत प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा द्वारा २०० घंटे की धुन का प्रबन्ध किया गया था । इसमें श्रीहरि के प्रसादी के धाम के संत-भक्त आकर धुन गाकर देव को खुश करने का प्रयास किये । जेतलपुरधाम तथा नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. आत्मप्रकासदासजी तथा स.गु.शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदास स्वामीने किया था ।

इस महामंत्र के धन पर प्रथम धुन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. ८-८-२१ के दिन प्रातः ५ बजे से दोपहर १२ बजे तक प.पू. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में हुई थी । इस अवसर के यजमान पद का लाभ माणसावाले प.भ. श्री डाह्याभाई नारणदास पटेल परिवार ने किया था ।

महामंत्र धुन की दूसरी धुन जेतलपुरधाम में ता. १४-८-२०२१ के दिन रखा गया था । प्रात ५ बजे से १२ बजे तक धुन गाई गयी थी । उसमें प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे । इस धुन के यजमान पद का लाभ प.भ. श्री घनश्यामभाई भगवानदास पटेल तथा प.भ. श्री नटुभाई भगवानदास पटेल परिवार करजिसणवालेने किया था । दोनो धुन के अवसर पर बड़ी संख्या में हरि भक्त लाभ लिये ।(कोठारी पूर्णस्वरुप स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से आगामी श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव तथा महोत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष्य में बोपल अपने श्री स्वामिनारा?ण मंदिर के महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी तथा स्वा. धर्मसुतप्रियदासजी के प्रेरणा-मार्गदर्शन से निम्नलिखित कार्यक्रम का सुन्दर प्रबन्ध किया गया था ।

(१) बोपल और वणझर मंदिर में श्री नरनारायण अष्टक का नियमित पाठ २०० घंटे की धुन । (२) प्रतिमास पूर्णिमा कालुपुर मंदिर पदयात्रा द्वारा मंगला आरती दर्शन । (३) प्रत्येक शुक्रवार को गरीबो को खिचडी खिलाना । (४) साणंद-गोधावी तथा नलकांठा गाँवो में संतो द्वारा ग्राम सभा सत्संग सभा की गई । (५) कोरोना काल में सभी के सुख देने वाला और मेडिकल केम्प और वैक्सीन लगवाने की प्रयास । (६) गरीब परिवारो की अन्नदान के रुप में खाद्य-पदार्थ के किट का वितरण । (७) कोरोना के महामारी से मृत हुए, आत्मजनो के कल्याण हेतु वणझर मंदिर में प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल की तरफ से श्रीमद् भागवत कथा का प्रबन्ध किया गया था । (प्रवीण उपाध्याय)

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायण भगवान के द्विशताब्दी वर्ष "पर्व" के उपलक्ष्य में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रेरणा से गांधीनगर से-२ के महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से निम्नलिखित गाँवो में सत्संग सभा का आयोजन

(१) बदरपुरा गाँव में : ता. २२-७-२१ के दिन पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में सुंदर सत्संग सभा हुई थी । इस में महंत शा. पी.पी. स्वामी और शा. ग्राम स्वामी सभी हरिभक्तोने उत्सव की सूचना के बाद कथा-वार्ता का लाभ लिये थे ।

(२) कर्म शक्ति अडमदाबाद : ता. २४-७-२१ के दिन यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी शा. राम स्वामी और शा. मुनि स्वामी हिंडोला के प्रथम दिन पर हिंडोला प्रारम्भ कराके सभा मे कथा-वार्ता करके । भगवान श्रीहरि को अलौकिक हिंडोला में झूलाये थे ।

(३) मोटेरा : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २४-७-२१ के दिन शा. देव स्वामी और स्वामी धर्मस्वरुपदासजी हिंडोला शुरु करके सभी को पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में कथा-वार्ता का लाभ दिये । ता. ३१-७-२१ को यहाँ सत्संग सभा में महंत श्री पी.पी. स्वामी और राम स्वामी पर्व महोत्सव के विष यमें बताये थे ।

(४) महादेवपुराछाला : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २७-७-२१ के दिन महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी और शा. स्वामीने ''पर्व'' महामहोत्सव के बारे में अनेक कार्यक्रमो की जानकारी दिये । कथा-वार्ता करके हरिभक्तो को लाभ दिये ।

(५) बायल : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २७-७-२१ के दिन महंत शा. पी.पी. स्वामी तथा शा. राम स्वामी सभी भक्तोने पर्व महाउत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रम की रुपरेखा के साथ साथ भगवान के अलौकिक लीला की बातें कराये थे ।

(६) हिम्मतपुरा : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २८-७-२१ के दिन स्वामी देवप्रकाशदासजी और स्वामी धर्मस्वरुपदासजी हरिभक्तो की सभा में कथा-वार्ता के साथ पर्व महा उत्सव के विषय में चर्चा किये ।

(७) नरोडा : ता. १-८-२१ को यहाँ के हरिभक्त और महंत स्वामी शा. पी.पी. स्वामी और घनश्याम स्वामीने कथा-वार्ता द्वारा पर्व के उपक्रम में अनेक क्रियाओ में जुडने के लिये अनुरोध किये ।

(८) महादेवनगर : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ३-८-२१ के दिन महंत शा. पी.पी. स्वामी और घनश्याम स्वामी कथा-वार्ता द्वारा अपने पर्व के विषय में समझाये थे ।

(९) वरसोडा : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-८-२१ को देवप्रकाश स्वामी, शा. सत्संगभूषण स्वामी और नरनारायण स्वामीने गाँव के सभी हरिभक्त को वचनामृत का पान कराके पर्व की रुपरेखा समझाये थे ।

(१०) सोनारडा : ता. ८-८-२१ के दिन यहाँ पर महंत शा. पी.पी. स्वामी, देव स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी आदि संत मंडल द्वारा सत्संग सभा में हरिभक्तोने पर्व महामहोत्सव की रुपरेखा के साथ भगवान का महात्म समझाये थे ।

(११) दियोदर (बनासकांठा) : श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ९-८-२१ के दिन संत-हरिभक्त सुंदर सभा में महंतश्री पी.पी. स्वामी, देवप्रकाश स्वामी और धर्मस्वरुप स्वामी आदि संतोने पर्व महाउत्सव की रुपरेखा के साथ भगवान की लीला चरित्र की कथा कहे थे ।

(१२) मुबारकपुरा : ता. ९-८-२१ के दिन यहाँ पर श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा. राम स्वामी और शा. गोपालजीवन स्वामी सत्संग सभा में कथा वार्ता के साथ पर्व महोत्सव की रुपरेखा को समझाये थे ।(शा. देवप्रकाश स्वामी, गांधीनगर से-२)

पाटडी बहनो के मंदिर में पर्व महोत्सव के लिये २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा सां. शांताबा, हंसाबा और रंजनबा की प्रेरणा से पाटडी बहनो के स्वामिनारायण मंदिर में ता. २४-६-२१ से ता. ११-७-२१ के मध्य श्री नरनारायणदेव ''पर्व'' महोत्सव के लिये सभी बहनोने कुल २०० घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की थी । पूर्णाहुति के समय २०० दीपक की माला से समूह आरती तथा श्री नरनारायणदेव की फूलो से अभिषेक करके उत्सव किये थे ।(कोठारीश्री पाटडी मंदिर)

पर्व मत्महोत्सव के उपलक्ष्य में पाटडी में वृक्षारोपण तथा मंत्र लेखन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से अपने ''पर्व'' महाउत्सव के उपलक्ष्य में ३१-७-२१ के दिन पाटडी गाँव में नारायणपुरा स्वामिनारायण मंदिर के संत मंडल द्वारा वृक्षारोपण और मंत्रलेखन नोटबुक वितरण किया गया था । जिस में गाँव के सभी हरिभक्त थे ।(चर्तुभुज स्वामी, नारणपुरा मंदिर)

पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर जरवला (भाईयो का) और (बहनो का) २०० घंटे की धुन सामाजिक क्रिया - कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा सा. शांताबा, रंजनबा और हंसाबा की प्रेरणा से जरवला गाँव के भाई-बहन श्री स्वामिनारायण मंदिर में ''पर्व'' महोत्सव के लिये २०० घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की थी ।(कोठारीश्री जरवला मंदिर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा और प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से तथा नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से हमारे पर्व महामहोत्सव के लिये ता. ५-८-२१ के दिन जरवला गाँव में नारणपुरा मंदिर के संत-मंडल द्वारा गाँव सफाई अभियान और वृक्षारोपण का सुंदर कार्य किया गया । जिस में गाँव के सभी हरिभक्तोने भाग लिया था । (चतुर्भुज स्वामी - नारणपुरा मंदिर)

पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में बामणवा के बहनो के मंदिर में २०० घंटे की धुन-वृक्षारोपण और मंत्रलेखन सरवा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद तथा सां. शांताबा, हंसाबा और रंजनबा की प्रेरणा से बामणवा के बहनो के मंदिर में अपने ''पर्व''

महामहोत्सव के लिये २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन सभी बहनोने किया था ।(कोठारीश्री)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से तथा नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में अपने पर्व महा उत्सव के लिये बामणवा गाँव में ता. २-८-२१ को नारणपुरा मंदिर के संत मंडल द्वारा मंत्र लेखन प्रवृत्ति, गाँव में वृक्षारोपण तथा और प्रसंशनीय कार्य किया गया था । गाँव के सभी हरिभक्त प्रेमपूर्वक भाग लिये थे ।(चर्तुभुज स्वामी, नारणपुरा मंदिर)

पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में खेरवा, बहनो के मंदिर में २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. गादीवाला के आशीर्वाद से तथा सां. शांताबा, हंसाबा और रंजनबा की प्रेरणासे श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरवा (बहनोका) श्री नरनारायणदेव के पर्व महामहोत्सव के लिये सभी बहनो ने श्री स्वामिनारा?ण महामंत्र का २०० घंटे की धुन गाये थे ।(कोठारीश्री खेरवा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में हिंडोला

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद तथा समस्त धर्मकुल की कृपा से स.गु. महंत शा. स्वामी अखिलेश्वरदासजी (अयोध्या) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में अषाढ वद-२ से श्रावम वद-२ तक ठाकुरजी की नित नई हिंडोला बनाकर झूलाया गया ।(के.पी. प्रजापति मोडासा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर-गोमतीनगर अहमदाबाद श्री गणपति महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से अहमदाबाद के गोमतीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ७-८-२१ शनिवार के दिन श्री गणपतिदेव और शिव परिवार की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण की गयी । अंत में सभी हरिभक्तो को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । इस अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी निर्गुणधासजी संत-मंडल के साथ आये थे । गोमतीपुर मंदिर में प.भ. हिरेनभाई (कांकरिया) ने सुंदर सेवा दी ।(समस्त सत्संग गोमतीनगर मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ गुरुपूर्णिमा पर धर्मकुल का पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के रणजीतगढ श्री स्वामिनारायण मंदिर में अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा के दिन अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के चित्र की पूजा-अर्चना की गई । स.गु. स्वा. भक्तिहरिदासजी और संत मंडल सुंदर रुप से मनाये थे । सभा में पू. स्वामीने धर्मकुल-धर्मवंशी का महात्म्य बताये थे । पर्व महाउत्सव के लिये हलवद क्षेत्र में गाँव-गाँव में महांत्र की नोटबुक (अपने कालुपुर मंदिर से प्रकाशित देकर महामहोत्स के प्रचारप्रसार तथा रुप रेखा समझाये थे । सभी को भाग लेने के लिये प्रेरणा दिये थे । (अनिल दूधरेजिया-धांगधा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (इटास्का) २३वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने स्वामिनारायण मंदिर शिकागो का २३ वाँ पाटोत्सव विधि का रुप से मनाया गया ।

इस अवसर पर यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी शा. भक्तिनंदनदासजी गुरु स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) के वक्तापद से श्रीमद् सत्संगिजीवन महाग्रंथ की नवान्ह पारायण कथा श्रवण हरिकी कराया गया था ।

ठाकुरजी के पूजारी ब्र. स्वा. कृष्णप्रियानंदजीने भगवान को प्रतिदिन अलौकिक श्रृंगार करके सभी को दर्शन कराते थे । इसी अवसर में अपने हंसवील मंदिर के ब्र. स्वा. पवित्रानंदजी आये थे । पूरे महीने यज्ञ नारायण का महामंत्र जाप की आहुति दी गई थी । २३ घंटे का अखंड धुन भी की गई थी । कथा के बीच में हिंडोला, पोथीयात्रा, फूलतौल, रास, शाकोत्सव, प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रागट्य दिन पर छप्पन भोग, संतो की अमृतवाणी ब्लड कैम्प, आदी कार्यक्रम किये गये थे । कथा के मध्य प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को प्रेम भरा आशीर्वाद दिये थे । सिनसिनाटी नूतन मंदिर में यहाँ के वक्ताओ ने सेवा देने की बात कही थी । हरिभक्त छोटे-बड़े सेवा में भाग लिये थे । ठाकुरजी के पाटोत्सव के दिन पूजारी संतो द्वारा षोडशोपचार अभिषेक विधिका रुप से किया गया था । जिस का दर्शन करके हरिभक्त भाव विभोर हो गये ।

अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में शिकागो मंदिर में प्रत्येक शनिवार को प्रातः एवम् शायं काल में विशेष धुन का आयोजन किया जाता है । यहाँ की समिती और भाई और बहन सेवा प्रेरणादायक रुप में सहयोग दिये थे । (वसंत त्रिवेदी - शिकागो मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

अषाढ सुद-१ दिपकभाई शंकरभाई (नारदीपुर), प.भ. हर्षदभाई बावरजी ठाकोरी (मनीपुर), प.भ. केयुर बी. दवे (अहमदाबाद), प.भ. श्रीकृष्णकांत कांतिलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल डाह्याभाई मगनदास (आंबलियासण), अ.नि. कमलाबेन हिराभाई पटेल (डेमाई) । **अषाढ सुद-२** प.भ. राजेशभाई मनुभाई पांभर (अहमदाबाद), प.भ. चौधरी जीवणभाई धर्माभाई (माणेकपुर), घनश्याम टिम्बर मार्ट (अहमदाबाद), प.भ. सविताबेन रणछोडभाई देवाणी (बापुनगर), अ.नि. शास्त्री स्वामी धर्मजीवनदासजी (अहमदाबाद), अ.नि. तेजाभाई रवजी वेकरिया (नारायणपर-कच्छ) । **अषाढ सुद-३** प.भ. घनख्यामभाई मफतलाल पटेल (वडु), प.भ. हेलतलबेन घनश्यामभाई माली (संतरामपुरा), अ.नि. रवजी करशन राधवाणी (बलदिया-कच्छ), अ.नि. रामबाई शामजी वाघजीयाणी (बलदिया-कच्छ) । **अषाढ सुद-४** प.भ. गोविंद रामजी वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. अल्पेशभाई महेन्द्रभाई पटेल (साबरमती), प.भ. घनश्यामभाई मफतलाल पटेल (वडु) । **अषाढ सुद-५** प.भ. विष्णुभाई तथा विपीनभाई (गांधीनगर), प.भ. रिशन अंकित पटेल (कणभा), प.भ. शशीकांत देवशीभाई पटेल (सुरत), प.भ. धवलभाई ठक्कर (अहमदाबाद), अ.नि. पुरीबेन नानजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. लक्ष्मीबेन वेलजीभाई मोरडिया (सुरत) । **अषाढ सुद-७** अ.नि. जडीबेन बाबुभाई (देउसडा) । **अषाढ सुद-८** प.भ. पटेल प्रवीणभाई माधवभाई (रिद्रोल), प.भ. रिद्धि आशीष भावसार (अहमदाबाद), प.भ. मनसुखभाई भीमजीभाई डोबरीया (अहमदाबाद), प.भ. मनहरबा रवुभा राणा (अहमदाबाद), स्वामी घनश्यामप्रकाशदाजी गुरु शा. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी (मूली), प.भ. प्रेमजीभाई वालजीभाई गोरसिया (सुखपर-कच्छ), प.भ. वालबाई नानजीभाई भंडेरी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. हरजीभाई भानुचंद जानी (भावसार) । **अषाढ सुद-९** प.भ. राकेशकुमार लक्ष्मणदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. परबतभाई लालजीभाई पिंडोरिया (कुंदनपुर-कच्छ), गं.स्व. चंपाबेन कानजीभाई जकासणिया (मेथाण), प.भ. वसंतबेन पटेल (अहमदाबाद), प.भ. महेन्द्रभाई अंबालाल पटेल (कुंडाल), प.भ. दिनेशकुमार मणीलाल (नंदासण), अ.नि. श्रीदेवु भगत जयसियाराम (राणाकंडोरणा), प.भ. पटेल हसमुखभाई कचराभाई (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-१०** प.भ. अगत्स्य संदीपभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. हरिश मनजी सुरजाणी (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. किरण हरिश खेताणी (केरा-कच्छ) । **अषाढ सुद-११ (एकादशी)** स्वामी प्रेमवल्लभदासजी तथा स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी (मूली), अ.नि. प्रवीणभाई रामजीभाई हिराणी (मिरजापुर-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर) । **अषाढ सुद-१२** प.भ. महेशभाई काशीभाई पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. पटेल कांतिभाई शंकरभाई (अहमदाबादा), अ.नि. मंजुलाबेन जगदिशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. धर्म बिन्देश पटेल तथा कियान बिन्देश पटेल (गांधीनगर), प.भ. डॉ. रविकांत मस्की (अडमदाबाद), अ.नि. लक्ष्मणभाई देवजीभाई खेताणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. जसुमतिबेन जोबनपुत्रा (भचाउ-कच्छ), प.भ. नीतीबेन परागभाई शाह (अहमदाबाद), प.भ. वाघेला जीतेन्द्रसिंह गंभीरसिंह (गोधावी) । **अषाढ सुद-१३** प.भ. मुकेशभाई मधुभाई मालवीया (नानामाचियाला), अ.नि. पार्षद रमेश भगत (बालासिनोर), प.भ. रीनाबेन जयंतीभाई पटेल (वासणा) । **अषाढ सुद-१४** प.भ. शारदाबेन सरोजबेन (झूंडाल), प.भ. भरतभाई कानभाई जाळा (अडमदाबाद), अ.नि. विराटबा गंभीरसिंह जाडेजा (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-१५** प.भ. गुणवंतीबेन महेन्द्रभाई (पंडोली), प.भ. हिरजीभाई राबडीया (लंडन), प.भ. विमलाबेन डाह्याभाई पटेल (माणसा), अ.नि. अंबालाल शिवाभाई पटेल (कोटा-राजस्तान) ।

अषाढ वद-१ प.भ. वत्सल गीरीशचंद्र एस. (अहमदाबाद), प.भ. श्लोक वासुदेवभाई पटेल (मोखासण), अ.नि. बबाभाई विठ्ठलभाई पटेल (अहमदाबाद), पू. सद्. शा. स्वामी नित्यस्वरुपदासजी (सरधार) । **अषाढ वद-३** अ.नि. रामजी करशन जीवाणी (बलदिया-कच्छ), प.भ. पुष्पाबेन दशरथभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रियम मितुलभाई जयेशभाई (कंकरीकंपा) । **अषाढ वद-४** अ.नि. स.गु. स्वामी माधवचरणदासजी (गढपुर), अ.नि. स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (डभाण), प.भ. कनुभाई हरिश्चंद्र (अहमदाबाद) । **अषाढ वद-५** अ.नि. मोहनभाई डुंगरभाई पटेल (देवपुरा), प.भ. रसिकलाल धरमदास पटेल (दावोल) । **अषाढ वद-७** प.भ. रवजीभाई मनजीभाई लींवाडी (नागलपुर-कच्छ) । **अषाढ वद-८** प.भ. पटेल कमलाबेन अंबालाल (झूलासण), प.भ. कोकिलाबेन भरतभाई मूलाणी (जीवराजपार्क), प.भ. वघासिया प्राणजीभाई धरमशीभाई चौहान (जामसर) । **अषाढ वद-९** प.भ. वाडीभाई मनजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **अषाढ वद-१०** प.भ. शारदाबेन रामभाई पटेल (वासणा महिला) । **अषाढ वद-११ (एकादशी)** प.भ. उनास महेन्द्रभाई पटेल (मुंबई), अ.नि. चंद्रिकाबेन भीखाभाई भासार (सरसपुर) । **अषाढ वद-१२** अ.नि. सां.यो. धोलीबा (मोरबी), प.भ. कांताबेन छगनभाई उकाणी (गांधीनगर), प.भ. गीरीशभाई परसोतमभाई पटेल (इसणाव), अ.नि. बाबुभाई मीठाभाई सुदाणी (बापुनगर), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. धर्म बी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. क्रियान बी. पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. अमरबेन मेयजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), अ.नि. रतनबेन लालजी वेकरिया (मांडवी-कच्छ) । **अषाढ वद-१३** अ.नि. सां.यो. बाश्रीमधुबा (गढपुर), प.भ. कांतिभाई बाबुभाई पटेल (वावोल), प.भ. वालविया प्राणजीवनभाई चकुभाई (मोरबी), अ.नि. प्रेमबाई खीमजी हालाई (मांडवी-कच्छ) । **अषाढ वद-१४** प.भ. अरविंद द्वारकादास पटेल (देलवाडा), प.भ. जयेश कणजरिया (घनश्यामनगर-हलवद) । **अषाढ वद-३०** प.भ. मगनभाई केशवजीभाई चौहान (अहमदाबाद), प.भ. जोशी विलासबेन महादेवप्रसाद (न्यु राणीप), प.भ. आकांक्षा दिनेशभाई पटेल (वस्त्राल), प.भ. धनसुखभाई गफूरभाई पटेल (खंभात), प.भ. कांतिलाल अंबालाल पटेल, स.गु. के.पी. स्वामी (महंतश्री जेतलपुर मंदिर), प.भ. तीर्थ हार्दिक पटेल (वडोदरा)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

मूली मंदिर में जन्माष्टमी का समैया

जेतलपुर मंदिर में पर्व के उपलक्ष्य में अखंड धून में सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री

शिकागो (अमेरिका) मंदिर में फलोत्सव अवसर पर अभिषेक और रक्तदान कैम्प

पर्व

२७ फरवरी से
५ मार्च-२०२२

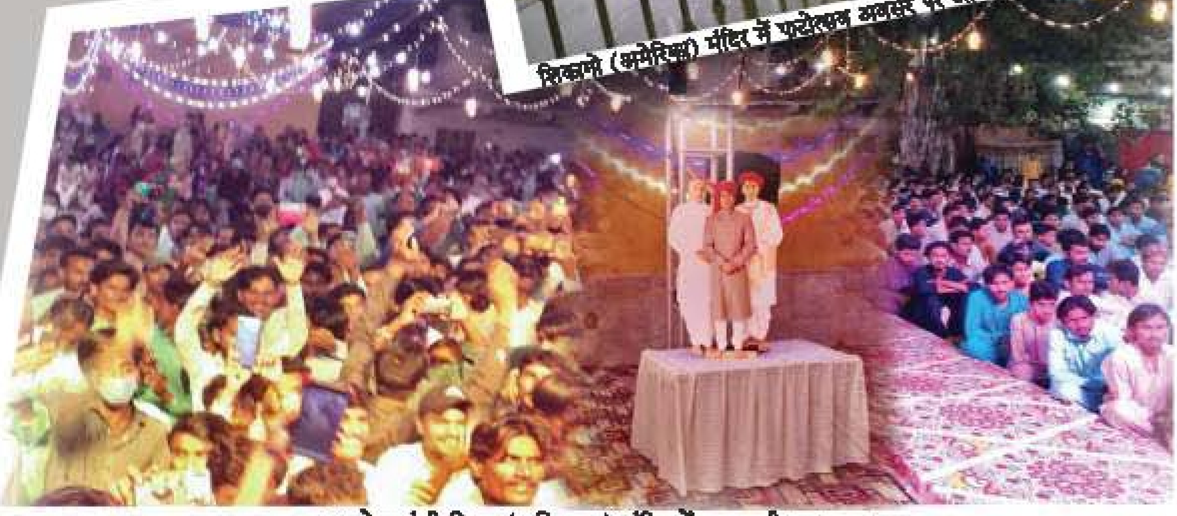

अपने कराँची स्थित (पाकिस्तान) मंदिर में जन्माष्टमी का उत्सव

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

श्री नरनारायणदेव देश के सभी मंदिरो द्वारा प्रकाशन करने से पूर्व स्वीकृति के विषय में

आप सभी को अवगत किया जा रहा है कि अब से अहमदाबाद देश के परिपाटी के अनुसार ट्रस्ट बोर्ड तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के बिना लिखित आदेश के श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर के प्रचार और प्रसार करने के लिये सोशियल मीडिया, प्रिन्ट मिडिया इत्यादि या अन्य कोई मीडीया का उपयोग नही करना है।

इसके पश्चात कई मंदिर तथा मंडल या सत्संगी अपने मंदिर के संस्था के दिपावली के कैलेन्डर प्रकाशित करते है। तो अब से मात्र कालुपुर मंदिर के द्वारा प्रकाशित कैलैन्डर प्रत्येक मंदिर को उपयोग करना होगा।

इसके पश्चात श्री नरनारायणदेव देश के कई शिखरबध्ध और हरिमंदिरो द्वारा अपने मन अनुसार मेटर, तसवीर और डिजाईन सत्संग के सामने रखते है। इसमें पुस्तक, पेम्पलेटस तथा अन्य साहित्य को बिना अनुमति के अब प्रकाशित करना एक गंभीर विषय माना जायेगा।

– आदेश से

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये आनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।

http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani